वंशी और मादल

ठाकुर प्रसाद सिंह



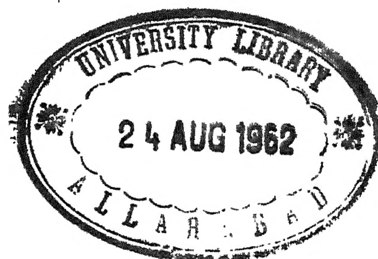
नया साहित्य प्रकाशन
२ डी मिंटो रोड इलाहाबाद



प्रथम संस्करण : मार्च' ५६
पुस्तक-संख्या : चौदह
मूल्य : तीन रुपये
मुद्रक : भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी
प्रकाशक : नया साहित्य प्रकाशन
२ डी, मिंटो रोड, इलाहाबाद

देवघर के सभी साथियों

को



लेखक की अन्य रचनाएँ : 'चौथी पीढ़ी' (कहानी-संग्रह), 'कठपुतली', 'पहिये', 'आँचल', 'पन्द्रह अगस्त' (नाटक), 'महामानव' (प्रबन्ध काव्य), 'हिन्दी निबन्ध और निबन्धकार' (आलोचना) और 'पुराने घर नये लोग' (विमर्श)।

अनुक्रम



कहने की बात

'५१ में पहली बार ये गीत प्रकाश में आये; तब इनमें श्री अज्ञेय को हिन्दी कविता के नये वातायन खुलते दीख पड़े थे। इसके बाद के ४-५ वर्ष प्रयोगवाद की चहल-पहल के वर्ष थे। इन दिनों उन गीतों के साथ मुझे भी प्रतीक्षा करने की स्थिति में पार्श्व में खड़ा रहना पड़ा।

आलोचकों को इन वर्षों में उनकी निज की दुविधा के चलते काफी कष्ट झेलने पड़े। नित्य उन्हें अपने वक्तव्य बदलने पड़ते थे। कल जिन्हें ठीक कहा आज उन्हीं से साफ-साफ बातें करने की स्थिति में आ गये, आज जिनसे साफ बातें की कल उन्हीं का पुनर्मूल्यांकन करने को सन्नद्ध हो गये। ऐसी स्थिति में यदि एक ही आलोचक के हिन्दी कविता पर लिखे गये चार निबन्धों में से दो में मेरा स्मरण किया जाय और दो में विस्मरण तो उसमें दोष मेरे भाग्य का ही कहा जायगा।

प्रयोगवाद के स्वर आज रास्ते के, दूर चले गये विरस संगीत की तरह मद्धिम पड़ गये हैं और नयी कविता के संकेतों से वातावरण गुंजित है। आलोचक पुनर्मूल्यांकन की स्थिति में आ गये हैं। कल तक जिसे रोमांटिक अवशेष कहकर पृष्ठभूमि में फेंक दिया गया था उसे आज हिन्दी कविता का स्वाभाविक विकास मानकर नये सिरे से स्थापित किया जा रहा है। ऐसा लगता है कि मेरे गीतों के प्रकाशित होने का समय आ गया है।

इन गीतों के माध्यम से मैं पिछले वर्षों में स्वयं अपने भीतर की जड़ता से संघर्ष करता रहा हूँ। संथाल परगने में नौकरी खोजने गया था, तब तक मेरी कविता का एक युग समाप्त हो चुका था। मैं अपने ही दुहराव से भयभीत था और किसी नये उद्वेग की खोज में था। उस समय मेरे और साथी इस जड़ता से त्रस्त होकर पश्चिम की ओर चले गये, मुझे परिस्थितियाँ पूरब के आदिवासियों के देश में ढकेल ले गयीं। यूरोप के प्रसिद्ध चित्रकार गोगाँ को जिस आदिम (प्रिमिटिव) उद्वेग के लिए टाहिटी द्वीप में प्रवास करना पड़ा, वह मुझे संथालों के बीच अनायास ही मिल गया। रोजी छूटे तो छः वर्ष होने को आये; पर वह आदिम उद्वेग छोड़ने की स्थिति में मैं आज भी नहीं आ पाया हूँ।

इन गीतों को मैंने श्रोताओं तथा पाठकों की सुविधा के लिए बार-बार संथाली गीतों का अनुवाद कहा है। इस अनुवाद शब्द के चलते मेरे कितने ही मित्रों को घोर कष्ट हुआ। कुछ ने तो मेरी अप्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए कुछ प्रामाणिक

पद्यबद्ध अनुवाद भी यत्र-तत्र भेजे, जिससे हिन्दी-पाठकों का अज्ञान कम हो जाय; पर सम्पादकों के व्यवस्थित षड्यन्त्र से उनकी यह सदिच्छा अपूर्ण ही रह गयी। दूसरी ओर अपनी ताजगी के लिए प्रशंसित इन गीतों ने मेरे छायावादोत्तर काल के 'महा-मानव' के प्रबन्धकार को अपनी छुद्र गहराइयों में डुबा लिया और मैं इनके भीतर से दूसरा व्यक्ति बनकर बाहर निकला।

अप्रामाणिक अनुवादक होने से यह सब सम्भव नहीं हो सकता था। वस्तुतः मैंने अनुवाद किये भी नहीं थे। संथाली गीतों के ताप में मैंने अपनी कविता का परिष्कार किया था। ये मेरी कविताएँ थीं जिनमें आदिम उद्वेग की धड़कन थी; जिनके रूप में आदिवासियों की सादी पर स्वस्थ भंगिमा थी।

लोक-गीतों तथा लोक-जीवन से अभिव्यंजना का माध्यम ग्रहण करने की जिस स्वस्थ प्रवृत्ति से नयी कविता प्रयोग का खेल बनने से बच गयी उसी ने मेरी इन कविताओं के भीतर प्रेरणा का कार्य किया है। छोटे से जीवन के पूरे ६ वर्ष मैंने अनुवाद को नहीं, नई रचना को दिये हैं। मेरे इस कथन की सत्यता में जिन्हें विश्वास होगा उनके निकट मेरी इन कविताओं का कुछ मूल्य अवश्य होगा। जो मुझे अप्रा-माणिक अनुवादक सिद्ध पर तुले बैठे हैं, उनसे मुझे पहले भी कुछ नहीं कहना था आज भी कुछ नहीं कहना है।

ईश्वरगंगी
वाराणसी

—ठाकुर प्रसाद सिंह

वंशी और मादल

पाँच जोड बाँसुरी

बासती रात के विह्वल पल आखिरी
पर्वत के पार से बजाते तुम बाँसुरी
पाँच जोड बाँसुरी

वशी-स्वर उमड घुमड रो रहा
मन उठ चलने को हो रहा
धीरज की गाँठ खुली लो लेकिन
आधे अँचरा पर पिय सो रहा

मन मेरा तोड रहा पाँसुरी
पाँच जोड बाँसुरी

नदिया का घना घना कूल है
वंशी से बेंधो मत प्यारे
यह मन तो बिंधा हुआ फूल है
नदिया का घना घना कूल है

थिर है नदिया का जल जामुनी
तिरती रे छाया मनभावनी
याद नहीं आती क्या चाँदनी ?

पिछला जीवन क्या फिजूल है
नदिया का घना घना कूल है

मैं आयी जल भर हूँ आनने
या नहीं कि सुख के दिन माँगने
जो जाता बीते पल थामने
करता वह बहुत बड़ी भूल है
नदिया का घना घना कूल है

कबसे तुम गा रहे, कब से तुम गा रहे
कबसे तुम गा रहे हो !
जालें धर आये हो नाव में
मछुओं के गाँव में
मेरी गली साँकरी की छाँव में
वंशी बजा रहे कि
वंशी लगा रहे
कबसे तुम गा रहे

कबसे हम गा रहे, कब से हम गा रहे,
कबसे हम गा रहे !
घनी घनी पाँत है खिजूर की
राह में हुजूर की
तानें खींच लायीं मुझे दूर की
वंशी नहीं दिल ही गला कर
तेरी गली में हम बहा रहे
कब से हम गा रहे !

सूनी तलैया की ओट में
डुबा दिया चोट ने
तीर लगे घायल कुरंग सा
मन लगा लोटने
जामुन सी काली इन भौंहों की छाँह में
डूबे हम जा रहे ,
कब से हम गा रहे !

अब मत सोचो प्रिय रे, अब मत सोचो
आँखों के जल को प्रिय वंशी से पोछो

धानों के खेतों सी गीली
मन में यह जो राह गयी है
उस पर से लौट गये प्रियतम के
पैरों की छाप नयी है

पावों के चिह्नों में जल जो निथराया
मन का ही दर्द उमड़ अँखियन में छाया

आँखों में भर आये उस जल को प्यारे
तुम वंशी से पोछो
अब मत सोचो

पात झरे फिर फिर होंगे हरे

साखू की डाल पर उदासे मन
उन्मन का क्या होगा
पात पात पर अंकित चुंबन
चुंबन का क्या होगा

मन मन पर डाल दिये बंधन
बंधन का क्या होगा
हासों के मोल लिये क्रंदन
क्रंदन का क्या होगा

पात झरे गलियों गलियों बिखरे

कोयलें उदास मगर फिर फिर वे गायेंगी
नये नये चिह्नों से राहें भर जायेंगी
खुलने दो कलियों की ठिठुरी ये मुट्ठियाँ
माथे पर नयी नयी सुबहें मुसकायेंगी

गगन नयन फिर फिर होंगे भरे
पात झरे फिर फिर होंगे हरे

सखि कहाँ जाउँ रे
मोको कहाँ ठाउँ रे?

आधा मन घरे मोरा
आधा मन बाहिरे
आधा मन लगा मोरा
कुँआरे के साँवरे

सखि कहाँ जाउँ रे
मोको कहाँ ठाउँ रे?

चलो चलें चम्पागढ़—सपनों के देश
प्यारे के देश

उत्तर से आ रहीं हवाएँ
बूँदों की झालर पहिने
दक्षिण में उठ उठ कर छा रहे
पागल बादल गहिरे !

बिजली के बजते सन्देश
प्यारे के देश
दस दिन के पाँव और दस दिन की नाव
दूर देश रे
तब जाकर मिल पायेगा पिय का गाँव
दूर देश रे

ऐसा विधना का आदेश
प्यारे के देश

चलो चलें चम्पागढ़—सपनों के देश

चंचल

पर्वत की घाटी का जल चंचल
झरने का दूध धवल

एक घड़ा सिर पर ले
एक उठा हाथ में

मैं चलती जल चलता साथ में

मेरी कच्ची कोमल देह पर
छलक छलक गाता है छल छल छल

जल चंचल
झरने का दूध धवल

दूर कहीं अकुशी है चिल्हकती

गहरे पथरौटे के कूप सी
प्रीत मोरी में ऊभचूभती
हाय दैया निरदैया आस रे

डोरी सी रह रह कर ढीलती
दूर कहीं अकुशी है चिल्हकती

पर्वत पर आग जला बासंती रात में
नाच रहे हैं हम तुम हाथ दिये हाथ में

धन मत दो, जन मत दो
ले लो सब ले लो
आओ रे लाज भरे
खेलो सब खेलो

ओठों पर वंशी हो हवा हँसे सर् सर्
पास भरा पानी हो, हाथों में मादर

फिर बोलो क्या रक्खा
दुनिया की बात में ?
हाथ दिये हाथ में

कटती फसलों के साथ कट गया सन्नाटा
बजती फसलों के साथ व्याह के ढोल बजे
मेरे माथे पर झुक झुक आते पीत चन्द्र
तुम इतने सुन्दर इसके पहले कभी न थे

चाँदनी अधिक अलसाई सूनी घड़ियों में
बाँसुरी अधिक भरमायी टेढ़ी गलियों में
कितनी उदार हो जाती कनइल की छाया
कितनी बेचैनी है बेले की कलियों में

पीले रंगों से जगमग तेरी अँगनाई
पीले पत्तों से भरती मेरी अमराई
पर्वती सरीखी तुम्हें कहूँ क्या न भी कहूँ
हर बार प्रतिध्वनि लौट पास मेरे आती

अच्छा ही हुआ कि राहें उलझ गयीं मेरी
यदि पास तुम्हारे जाता तो तुम क्या कहते ?

झर झर झर झर

जैसे यूकिलिप्टस के स्वर

बरसो बादल बस एक प्रहर

ओरी मेरी बरस रात भर

नन्हें छत्रक दल के ऊपर

इन्द्रदेव तेरा गोरा जल

मेरे द्वार विहँसता सुन्दर

तेरे स्वर के बजते मादल

रात रात भर

बादल, रात रात भर

झर झर झर झर

बरसो बादल बस एक प्रहर

दिन बसंत के

राजा रानी से तुम दिन बसंत के
आये हो हिम के दिन वीतते
दिन बसंत के

पात पुराने पीले झरते हैं झर झर कर
नयी कोपलों ने शृंगार किया है जी भर
फूल चन्द्रमा का झुक आया है धरती पर
अभी अभी देखा मैंने वन को हर्ष भर

कलियाँ लेते फलते फूलते
झुक झुक कर लहरों पर झूमते
आये हो हिम के दिन बीतते
दिन बसंत के

मेरे घर के पीछे चन्दन है
लाल चन्दन है

तुम ऊपर टोले के
मैं निचले गाँव की
राहें वन जाती हैं रे
कड़ियाँ पाँव की

समझो कितना मेरे प्राणों पर बन्धन है!
आ जाना वन्दन है
लाल चन्दन है

मेरे आँगन से जाते पहने
पीली धोती पीला ओढ़ना
आँगन में फूल खिले दूधिया
हाथ बढ़ाना पर मत तोड़ना

बेला लो डूब ही गयी
झलफल बेला
झिलमिल बेला

बेला लो डूब ही गयी

रो रो कर नदी के किनारे
धारे, धारे

प्राण विकल तेरे रे हारे
दिशा तुम्हें भूली रे
नइहर के दूर हैं सहारे

वही हुआ, नाव की तुम्हारे
डोरी अब टूट ही गयी
बेला लो डूब ही गयी

मेरा धन–मेरा क्वाँरापन
मुझे छोड़ सबको सुख होगा
सब लौटा पायेंगे निजपन
तुम चाँद सी बहू पाओगे
पिता करें स्वीकार बधू-धन

रात रात भर नाच नाच कर
बिदा हो चलेंगे स्नेही-जन
पर कैसे लौटा पाऊँगी
खोया जो मेरा अपनापन ?
मेरा धन
मेरा क्वाँरापन

बीच गाँव से होकर जानेवाली लापरवाह
तुझे न शायद लग पाती अपने ही मन की थाह
किन्तु फूल जूड़े का मुसकाता होकर पागल
आँचल किसको बुला रहा है हिला हिला कर बाँह?

तुम मान्दॉरिया
हम नाचॉनिया

मादर ना बजा
रसीला मादर ना बजा

बाप खड़े
माँ खड़ी
खिड़की का पल्ला धरे
खड़ा है पिया

हम नाचॉनिया
मादर ना बजा

बाप माँ से मुझे छीन लोगे
क्या मुझे प्यार उतना ही दोगे ?

तुम भरोसा करो प्राण मेरा
प्यार मेरा कि है प्यार मेरा
मैं तुझे प्यार दूँगा अनोखा
है न पाया किसी ने न देखा

तुम मेरी हम तुम्हारे ही होंगे
'तीरी-पुरुष दुलाड़ तीरे-जूगे'

झरती है तुलसी की मंजरी
निखर रहे पात रे
वजती है पियवा की बंसरी
सिहर रहे गात रे

फूला इचाक् पलाश लो फूला
आ, अमराइयों में प्रिय मेरी
ग्रीष्म के अंधड़ का पड़ा झूला
पलाश लो फूला

मेरे आँगन में है रूई
रूई का सूत
उत्तर से आँधी
है दक्षिण से पानी
मुझको है दीये की
बाती बनानी
खबरदार रे
आँधी पानी के पूत

फूल; इचाक्; पलाश लो फूला
आ, अमराइयों में प्रिय मेरी
ग्रीष्म के अंधड़ का पड़ा झूला'
पलाश लो फूला

मेरे आँगन में है रूई
रूई का सूत
उत्तर से आँधी
है दक्षिण से पानी
मुझको है दीये की
बाती बनानी
खबरदार रे
आँधी पानी के पूत !!

यात्राएँ बीतीं
पर्वत कीं--
मेले बीते

तुमसे जेठी ब्याहीं
ब्याहीं छोटी तुमसे

सबने सज-बजकर ब्याह रचे
पाये मनचीते
मेले बीते

पगली बेटी अनमन
घूम फिरी तू रनबन

बीते दिन गिन गिन
आँसू पीते

शाल के फूल
पलाश के फूल
सुहाग की मूल

मँदार के फूल
कनैर के फूल
सुहाग की भूल

न फूले तो फूल
जो फूले तो फूल
न भूली तो भूल

फूल से सजाओ
मुझको
फूल से सजाओ
माथे पर फूल धरो मेरे माँ
बलि बलि जाओ
माँ मुझे सजाओ

शाल के सुहाने फूल
अंग अंग फूले
मेरी यह देह शाल-
बन सी
माँ झूमे

फूलों सी मुझे
देवचौरे घर आओ
बाबा घर आओ
माँ मुझे सजाओ

यह कैसा पेड़
लता है किसकी ?
सेंदुर का पेड़
लता काजल की

तुम न बताना सबको
तुम न बुलाना सबको

अँगुली दिखाना मत
देखो मुरझाना मत
नजर इसे है विष की

हम दोनों आयेंगे
ब्याह किये आयेंगे
सेंदुर से माथा भर
काजल रचायेंगे
भेंट चढ़ायेंगे आँसू-जल की
लता काजल की

तिरि रिरि, तिरि रिरि, तिरि रिरि
वजी बाँसुरी
चंदन बन
मलयागिरि
तिरि रिरि
रात का बिराना पल
आखिरी
बजी बाँसुरी
तिरि रिरि

तुमने क्या नहीं देखा
आग सी झलकती मैं

तुमने क्या नहीं देखा
बाढ़ सी उमड़ती मैं

नहीं, नहीं, पहचाना
धूल भरी आँधी में

जानोगे तब जब
कुहरे सी घिर जाऊँगी

देखो मुझको मैं क्या
बार बार आऊँगी ?

आछी के बन

आछी के बन अगवारे
आछी के बन पिछवारे
आछी के बन पूरब के
आछी के बन पच्छिमवारे
महँका मह मह से रन-बन
आछी के बन

भोर हुई सपने सा टूटा
पथ महँ महँ का पीछे छूटा
अब कचमच धूप
हवाएँ सन सन
आछी के बन

पर्वत के ऊपर हैं वंशी
नीचे मुरली

मेरी दोनों ओर धार है
धार नहीं प्रिय की पुकार है
मैं रेती सी बँधी बीच में
बंदी मेरा होता प्यार है

मूढ़ बधिक के बंधन में कसती
मैं कुरली
नीचे मुरली

चिड़ियों ने पर्वत पर घोंसला वनाया
दिन में रो रात रात जी भर कर गाया

फिर पलाश फूले रँगते बन के छोर
रंग की लपट से भर जाती है कोर
आँखें भर आयीं प्रिय मन यह भर आया

कोंपल के होठों ने बाँसुरी बजायी
पिड़कुलियों ने सूनी दोपहर जगायी
पतझर ने आज नहीं सोने मुझको दिया
तुड़े मुड़े पत्तों ने खिड़की खटकायी
मन ने पिछले सपनों को फिर दुहाराया

अरी मेरी लालसे ! कहो क्या कर डाला
इन बबूल की बाहों में कदम्ब माला ?

नहीं छूटते सूख गये पत्ते
खिजूर के
मैं भी प्रीत नहीं छोड़ूँगी
भूल यदि गये

प्यार क्यों ! अपार प्यार ! सुधि मिट जाने दो
उसकी सुहानी याद अब मत आने दो
मोह-ममता को बाँध साथ प्रेम-पत्रिका के
बहती नदी में अब छोड़ो, बह जाने दो

आधी रात
वाग में पिड़कुल
कुकुर डुबुर स्वर
आधी रात
यहाँ मैं आकुल
तुम आओ घर

नदी के उस पार तुम इस पार हम
छोड़ो बिदा दो

नहीं सम्भव है कि हम तुम एक तट
पर हों, विदा दो

तनिक आँचल खोल कर स्मृति का—
करो स्वीकार माला मुन्द्रिका या
याद इससे ही करोगी आज की सरि चन्द्रिका या
चाँदनी का तीर मावस का हृदय
जैसे भिदा हो
बिदा दो

नहीं मान्दोली* मुझे दो
मैं अवश हूँ धड़कनों से
यह बनेगी प्यार की थपकी
मुझे पागल क्षणों में
स्वप्न सा जीवन मिला दुःस्वप्न-सा उसको
विता दो

*गले में पहनने के लिए तावीज

यह मेरे प्रिय का मण्डप है
इसको मत होने दो सूना
चाहे मन कितना हो सूना
उठता हो भीतर से रोना

पर झाझों, मादल वंशी के
स्वर पर हमें निछावर होना
जय हो यहाँ रसिक की जय हो
मण्डप प्रिय का शोभामय हो
मेरे भाग दिया की बाती
मुझको केवल जलते जाना

गाँव के किनारे है बरगद का पेड़
बरगद की झूलती जटाएँ
कैसी रे झूलती जटाएँ
भूमि तक न आएँ
ऐसे ही लड़के इस गाँव के
पहले तो पास चले आयें
झुक झुक कर बाहें बढ़ायें
मिलने के पहिले पर
लौट लौट जाएँ
बरगद की झूलती जटाएँ

बन्धन से एक साथ हारे
हम दोनों एक साथ हारे

सेमल औ ताड़ वहाँ
मकड़े ने साधे
वैसे ही प्रेम हमें
जीवन में बाँधे
हम हुए तुम्हारे प्रिय
तुम हुए हमारे

दुग्ध पुष्प सी उज्ज्वल
मड़वे में हुई लाल
सिन्दूरी आभा में
क्षण भर होकर निढाल

व्याही मत समझो
मैं क्वाँरी हूँ नन्दलाल

मैं वंशी

माँ हमारी दूध का तरु

बाप बादल

औ' बहन हर बोल पर

बजती हुई मादल

उतर आई हँसी

सब लोग देखते आग लगी त्रिकुटी की
रे कौन देखता आग लगी इस जी की

मैं अपने मन में हीं जलती
हूँ बोरसी की आग
धधक पात पतझर के
जल जाते, जंगल के भाग

सब लोग देखते आग लगी त्रिकुटी की

जामुन की कोंपल सीं चिकनी ओ !
मुझे छिपा आँचल में
जाड़ा लगता है क्या भीतर आ जाऊँ ?

फूलों की मह मह सी रानी ओ !
मुझे ढाँक बालों में
बादल घिरते हैं क्या भीतर आ जाऊँ ?

मुझे छिपा
मुझे ढाँक
आँचल से बालों से
जामुन की कोंपल सी चिकनी ओ !

खिले फूल से दिन यौवन के——
ऐसे दिन आये हैं
नये पात से
गात सुहाये
हंस सिमट
पावों में आये
तेरे साथ सुगन्ध बनों की
ले ये दिन आये हैं
खिले फूल से दिन यौवन के–

जंगल में आग लपट है झर झर
राजा की डब डब हैं पोखर
जल जाऊँ
डूब मरूँ
कैसे यह बिरह तरूँ
पर सुन तो
दूर कहीं
बजती है मादल

नदी किनारे
बैठ रेत पर
घन कदंब के तले
होगे बजा रहे
वंशी
हे मेरे प्रिय साँवले
एक हाथ से दीया बालूँ
एक हाथ से आँखें पोछूँ
सोचूँ
मुझसे भी होंगे क्या
दुःसह ताप के जले ?

धान के ये फूल
ये आनन्द के उपहार
ये कपासी फूल
तेरे नित्य के शृंगार

सोन रंगी फूल हुन्दी
सी जवानी खिली
जामुनी कोंपल सरीखी
देह चाँदी मिली

फूल कद्दू के खिले
यह देह लहरायी—
लहलहाती लता सी
लो गदबदा आयी

कहाँ से पा गयी प्रिय
ये अनदिखे सब साज
और पीतल ठनकने
सी खनकती आवाज?

पर्वत पर्वत पर सरसों
घाटी घाटी राई

किसने सरसों बोयी
किसने बोयी राई
मुण्डाओं की सरसों
संथालों की राई

एक हाथ की मुंदरी
एक पैर की गूँगी
किससे क्या लेकर मैं
किसको क्या दूँगी ?

यह मेरे जीवन का जल
कमल-पात पर हिम-बूँदों सा टलमल रे
कितना चंचल
इसीलिए तू
खाता चल
पीता चल
गाता चल
चल रे चल
थोड़े ही दिन का यह छल
यह मेरे जीवन का जल

ताराओं के हास से
चन्दरिमा के पास से
आया है आकाश से
पा सके तो पा सके
जा रहा है हाथ से
हो रहा देखो ओझल
यह मेरे जीवन का जल

सीखा कहाँ से रोना ?
धर गाल हाथ पर तुम
आँसू बहा रहे हो
लगता हमें है ऐसा
तुम आदमी नहीं हो

भैंसों को आगे ठेलो
हल डोर उठो ले लो
फिर गूँजे स्वर तुम्हारा
हेलो लो हेलो हेलो

धरती तुम्हारी प्यारी
दे देगी तुम्हें सोना
सीखा कहाँ से रोना ?

लक्ष्मी

सरगे तो हिर हिर
पाताले तो छल छल
हमारो नैहरा कतो दूर?

छः महीने बाबा घरे
बारह राखें लोग
आज दिना छोड़ो मोहें
जाना है बड़ी दूर

पुरुबही गरजे रे
पछिमही गरजे
गरज गरज घना
बरसे रे बरसे
जाना है बड़ी दूर

भिंजत सँदेश मोरा
प्रिय कौने देस मोरा
भिंजत तिलक मोरा
भिंजत सिंदूर
जाना है बड़ी दूर

किसान-बहू

लच्छी हे लच्छी
माये हे माये
कहाँ लच्छी तोहरा जनम ?
लच्छी हे लच्छी

सुनो हो सुनो
बहिना हो बहिना
सुनो हो सुनो

हमारो जनम धानी
धूलाय पानी
माँटी-ताले हमारो जनम
बहिना हो बहिना

जोतो हो जोतो
जोतो हो जोतो
जोतो हो जंगल झारी थान
जोतो हो किसान

हाला हाला हलवारा
हाला हाला कडवारा
हाला रे जोताय

उठा रंगिया बरदा
चला रंगिया बरदा
सरगे चील्ह मँडराय
हाला रे जोताय
जोतो जंगल झारी खेत
जोतो जंगल झारी थान
जोतो हो किसान

किसान-वधू

रोपो हो रोपो
रोपो हो रोपो
रोपो हो बासमती धान

रोपो हो रोपो, रोपो हो रोपो
झर झर बरसत वारि रे
चलो संगे रुपनी हमारीये खेत
कि बेहन बेटी आजि कुँवारि रे
रोपो हो बासमती धान

